ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-8* November-2021
Anthology : The Research

देहरादून में प्रवासित तिब्बती समुदाय के सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन पर प्रवास का प्रभाव

Impact of Migration on Social and Cultural Life of the Migrating Tibetan Community in Dehradun

Paper Submission: 10/11/2021, Date of Acceptance: 23/11/2021, Date of Publication: 24/11/2021

[redacted]

तिब्बती समुदाय के सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन में परिवर्तन हुआ है तथा परिवर्तन की यह प्रक्रिया हमेशा चलती भी रहेगी क्योंकि जब एक विशिष्ट सामाजिक व सांस्कृतिक समुदाय दूसरे स्थान पर प्रवास करता है तो स्थानीय संस्कृति के प्रभाव से प्रवासित समूह के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन का पारम्परिक स्वरूप धीरे-धीरे परिवर्तित होने लगता है। प्रवास की पहली पीढ़ी अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक संस्थाओं को संरक्षित करती है जबकि दूसरी तथा तीसरी पीढ़ी स्थानीय संस्कृति से प्रभावित होती है जिसके कारण परिवर्तन होना स्वाभाविक है। तिब्बती समुदाय के शैक्षिक, पारिवारिक, धार्मिक, आर्थिक तथा राजनैतिक संस्थाओं पर प्रवास का प्रभाव पड़ा है।

Changes have taken place in the social and cultural life of the Tibetan community and this process of change will always continue because when a specific social and cultural community migrates to another place So due to the influence of local culture, the traditional form of socio-cultural life of the migrating group gradually starts changing. The first generation of migration preserves its social, cultural and religious institutions while the second and third generations are influenced by the local culture. Due to which change is natural. Migration has had an impact on the educational, family, religious, economic and political institutions of the Tibetan community.

मंजू नेगी
शोध छात्रा,
समाजशास्त्र विभाग
डी. एस. बी. कैंपस,
नैनीताल, उत्तराखण्ड, भारत

मुख्यशब्द: तिब्बती समुदाय, सामाजिक व सांस्कृतिक समुदाय।
Tibetan Community, Social and Cultural Community.

प्रस्तावना

जनसांख्यिकी सर्वेक्षण

देहरादून में स्थित सेटलमेंट क्लस्टर सेटलमेंट के अन्तर्गत आता है। यह सेटलमेंट सन् 1978 में स्थापित किया गया था। वर्तमान समय में इस सेटलमेंट की कुल जनसंख्या 3,870 है। सेण्ट्रल तिब्बतन एसोसिएषन द्वारा कराए गये 2009 के आकडों के अनुसार भारत में तिब्बती प्रवासियों की संख्या 94,203 है। नेपाल व भूटान में क्रमषः 13,514 व 1,298 है।1 भारत के कुल 12 राज्यों में कुल 45 तिब्बती सेटलमेंट हैं।2 इन तिब्बती सेटलमेंटस को भारत सरकार द्वारा 25,000 एकड भूमि प्रदान की गयी है। भारत में तिब्ब्त की प्रषासनिक संस्था सेन्ट्रल तिब्बतन रिलीफ कमेटी के अनुसार भारत में 15 कृषि आधारित 13 हस्तकला आधारित और 11 क्लस्टर सेटलमेंट हैं। 3 अतः अध्ययन को मुख्य रूप से निम्न बिन्दु पर केन्द्रित किया गया है-

1. तिब्बती समुदाय के सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन में प्रवास के प्रभाव का अध्ययन करना।

साहित्यवलोकन

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए पूर्व में किए गए विभिन्न साहित्य का पुनरावलोकन किया गया है। फ्रांक मोरेज (1960) ने अपने अध्ययन में दलाई लामा के तिब्बत से भारत में प्रवास की घटनाओं का विश्लेषण किया है तथा तिब्बत द्वारा भारत को अपने शरण स्थल के रूप में चुनने के कारणों का भी अध्ययन किया है। चूंकि भारत को बौद्ध धर्म की शिक्षा तथा उत्पत्ति का प्रमुख केन्द्र माना जाता है व दोनों देशों की धार्मिक व अध्यात्मिक क्षेत्रों में भी कई समानताए हैं अतः यह कहा जा सकता है कि तिब्बती शरणार्थियों के लिए भारत एक ऐसा स्थान था, जहाँ वे अपनी संस्कृति को संरक्षित रख सकते थे। जिस समय विश्व में शरणार्थियों को एक समस्या की तरह देखा जा रहा था उस समय भारत द्वारा तिब्बती शरणार्थियों की समस्याओं का समाधान शान्तिपूर्ण तरीके से किया गया। भारत ने उन्हें रहने का लिए स्थान दिया तथा तिब्बती शरणार्थियों को यह स्वतन्त्रता भी थी कि वह भारत में रहकर चीन के विरूद्ध शान्तिपूर्ण विरोध प्रदर्शित कर सके तथा अपने देश तिब्बत वापस लौट सके।

वी. पाकशपा (1978) ने शरणार्थी तिब्बती समुदाय को प्रवास के उपरान्त नए वातावरण में होने वाली सामन्जस्य सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन किया है। अपने अध्ययन में उन्होंने यह पाया कि नए सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण में शरणार्थियों को अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता है

तथा उन्होंने तिब्बती शरणार्थियों के अपने मूल स्थान तिब्बत को छोड़ने के कारकों का भी अध्ययन किया है जिसमें उन्होंने 869 परिवारों को उत्तरदाताओं के रूप में लिया है। जिसका निष्कर्ष यह निकला कि राजनैतिक, धार्मिक कारणों से उन्होंने भारत में शरण ली तथा वे अपने गुरू दलाई लामा के साथ भारत में प्रवासित हुए।[5]

गिरिजा सकलानी (1984) ने अपने अध्ययन में शरणार्थी तिब्बती समुदाय के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन में प्रवास के दौरान हुए परिवर्तनों का विश्लेषण किया है। उन्होंने यह स्पष्ट किया है कि प्रवास की प्रक्रिया के दौरान जो परिवर्तन तिब्बती समुदाय के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन में आए हैं, वह किसी भी प्रवासी अथवा शरणार्थी समुदाय के लिए एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। उन्होंने इस अध्ययन में 8,500 तिब्बती शरणार्थियों को उत्तरदाताओं के रूप में लिया है, जो भारत के विभिन्न सेटलमेण्ट्स में निवास करते हैं। शरणार्थी तिब्बती समुदाय व स्थानीय लोगों के बीच सम्बन्धों तथा प्रवास के उपरान्त इस समुदाय की युवा पीढ़ी के विचारों में आए परिवर्तन का भी अध्ययन किया है। यह देखा गया है कि प्रवास के उपरान्त उनके सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक व राजनैतिक जीवन तथा विवाह, परिवार व धर्म जैसी संस्थाओं में भी परिवर्तन हुआ है। यद्यपि इनकी युवा पीढ़ी के विचारों में परिवर्तन देखा गया है लेकिन युवा पीढ़ी का अपने देश (तिब्बत) के प्रति राष्ट्रीयता की भावना में कोई कमी नहीं आई है। प्रवास के दौरान की प्रथम पीढ़ी अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने के लिए प्रयासरत रहती है तथा इनका मानना है कि अपनी सांस्कृतिक, राजनैतिक, धार्मिक तथा सामाजिक पहचान को संरक्षित रखने से ये लोग अपनी मूल सामाजिक संरचना व संस्कृति से जुड़ाव महसूस करते हैं। यह भी देखा गया है कि अधिकतर लोग दलाई लामा को अपने समुदाय में सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन के संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण मानते हैं।6

राजीव जायसवाल (1997) द्वारा भारत में तीन दशकों से रह रहे शरणार्थी तिब्बती प्रवासियों का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में उन्होंने तिब्बती समुदाय के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन में होने वाले परिवर्तनों को स्पष्ट किया है। साथ ही भारतीय एवं तिब्बती समुदाय के सदस्यों की पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन करना तथा व्यक्तिगत एवं सामूहिक स्तर पर तिब्बती शरणार्थियों द्वारा अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान सुरक्षित रखना, दूसरी संस्कृति से अनुकूलन, एकीकरण तथा आत्मसातीकरण का भी उनके द्वारा अध्ययन किया गया है। उनके अध्ययन निष्कर्ष स्पष्ट करते हैं कि तिब्बती समुदाय अपनी विशिष्ट पहचान खोये बिना न केवल अपनी सांस्कृतिक पहचान को दूसरे देश में बनाये रखने में सफल रहे हैं, बल्कि 1959 से पहले जिन आधुनिक विचारों का ज्ञान इस समुदाय के सदस्यों को नहीं था उन विषयों को भी अब ये लोग आत्मसात् कर चुके हैं।7

रामानुज गांगुली (2002) ने अपने अध्ययन में शरणार्थियों के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन तथा शरणार्थियों के लिए बनाए गए अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों का विश्लेषण किया है। यह देख गया है कि प्रवासी तिब्बती समुदाय सम्पूर्ण विश्व में मात्र एक ऐसा समुदाय है जो अपनी विशिष्ट संस्कृति की पहचान तथा धार्मिक रीति-रिवाजों को बिना किसी रोक-टोक के बनाये रखने के लिए भारत में स्वतन्त्र है। स्पष्ट है कि तिब्बती शरणार्थियों को उनकी सांस्कृतिक पहचान बनाये रखने में भारत सरकार ने विशिष्ट भूमिका निभायी है। तिब्बत के भारत के साथ ऐतिहासिक सम्बन्ध रहे हैं। भारत से अनेक धार्मिक गुरू तथा विद्वान तिब्बत आमन्त्रित किये जाते थे जिन्होंने तिब्बत में बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में विशिष्ट भूमिका निभाई। अतः यह कहा जा सकता है कि भारत में न केवल भारत सरकार अपितु गैर-सरकारी संगठनों तथा स्थानीय समुदाय ने भी तिब्बतियों को अपना सम्पूर्ण सहयोग दिया। उन्हें भारत में अपनी शैक्षिक संस्थाओं के संचालन तथा सामाजिक-सांस्कृतिक क्रियाओं को करने की स्वतन्त्रता प्रदान की गयी है जिसका परिणाम यह है कि सांस्कृतिक विभिन्नताओं के बावजूद तिब्बती शरणार्थी समुदाय अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित किये हुए है।8

प्रस्तुत अध्ययन प्रवासित तिब्बती समुदाय के सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन पर आधारित है। तिब्बत भारत के हिमालय पर्वत श्रृंखला के ऊपर लगभग 4,500 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है इसलिए इसे संसार की छत भी कहा जाता है। चीनी फौज ने सन् 1949 में तिब्बत में प्रवेश किया और सन् 1959 में तिब्बत में चल रहे राष्ट्रीय आन्दोलनों का दमन कर दिया। तिब्बत का सम्पूर्ण क्षेत्र चीन ने अपने अधिकार में ले लिया। चीन के अत्याचारों से परेशान होकर तिब्बती समुदाय के अध्यात्मिक गुरू दलाई लामा व लगभग 80,000 तिब्बती लोग भारत में शरणार्थी के रूप में आए। तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा तिब्बतियों को उत्तरी भारत के हिमांचल प्रदेश में स्थिति मैक्लियोडगंज धर्मशाला में स्थान दिया गया क्योंकि उत्तरी भारत का भौगोलिक वातावरण तिब्बत से काफी मिलता-जुलता था, जिसके कारण तिब्बतियों को हिमांचल प्रदेश में प्रवासित किया गया। वर्तमान समय में सम्पूर्ण भारत के विभिन्न स्थानों में तिब्बती समुदाय के अनेक सेटलमेण्ट्स हैं। भारत सरकार द्वारा तिब्बती समुदाय को विभिन्न स्तरों पर अनेक प्रकार से सहायता की गयी। भारत सरकार ने न केवल उन्हें रहने के लिए स्थान दिया बल्कि उनकी विभिन्न आवश्यकताओं जैसे - शिक्षा, स्वास्थ्य इत्यादि का भी ध्यान रखा गया। बुनियादी सुविधाएं प्राप्त करने के उपरान्त प्रवासित तिब्बती समुदाय का महत्वपूर्ण मुद्दा अपनी विशिष्ट धार्मिक व सांस्कृतिक पहचान को नए परिवेश में बनाए

रखने का था। तिब्बती समुदाय के लिए अपना धर्म सबसे अधिक महत्वपूर्ण संस्था है, जिसको संरक्षित करने के लिए उन्होंने भारत में प्रवास किया। प्रवास के उपरान्त अपनी विशिष्ट सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान को तिब्बती समुदाय नए परिवेश में खोना नहीं चाहता था। नए परिवर्तन में अपनी विशिष्ट परम्परा तथा प्रवास के दबाव के मध्य उनके सामने भेदभाव, अलगाव तथा समायोजन से सम्बन्धित ऐसी अनेक समस्याएं तिब्बती समुदाय के समक्ष थी परन्तु तिब्बती समुदाय ने न केवल नए परिवेश में अपनी विशिष्ट पारम्परिक पहचान को बनाए रखा बल्कि भारत के स्थानीय लोगों व संस्कृति के बीच भी घुल-मिल गए हैं। भारत में तिब्बती समुदाय के लोग एक विशिष्ट संस्कृति का अनुकरण करने वाला समुदाय है इसलिए तिब्बती समुदाय को 'एथनिक समूह' भी कहा जाता है। 'ऐथनिक समूह' का प्रयोग उन समूहों के लिए किया जाता है जो स्वयं को सांस्कृतिक रूप से विशिष्ट मानते हैं तथा अन्य समुदाय द्वारा भी स्वीकृत किये जाते हैं।

भारत में प्रवास के उपरान्त तिब्बती समुदाय व उनके धार्मिक गुरू दलाई लामा ने अपने सामाजिक व सांस्कृतिक धरोहर को बनाए रखने के लिए अनेक कार्य किये। इसके लिए उन्होंने अपना राजनीतिक संगठन भारत में भी सक्रिय रखने के लिए भारत सरकार से अनुरोध किया। भारत सरकार द्वारा उनके इस अनुरोध को स्वीकार कर लिया गया। तत्पश्चात् दलाई लामा ने हिमांचल प्रदेश में स्थित मैक्लियोडगंज धर्मशाला में अपनी राजनीतिक संस्था सेन्ट्रल तिब्बतन एडमिनिस्ट्रेशन (सी.टी.ए.) स्थापित की। प्रवासित तिब्बती समुदाय का प्रशासन पारम्परिक तिब्बती मूल्यों के आधार पर कार्य करता है जिसके प्रमुख परमपावन दलाई लामा होते हैं। यह प्रशासनिक संस्था तिब्बत से बाहर रहकर तिब्ब्त की स्वतन्त्रता के लिए संघर्षरत है। युवा पीढ़ी को भी तिब्बत की स्वतन्त्रता के लिए जागरूक करने का प्रमुख कार्य करती है।

अध्ययन का उद्देश्य

तिब्बती समुदाय के सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन में प्रवास के प्रभाव का अध्ययन करना।

सेन्ट्रल तिब्बतन एडमिनिस्ट्रेशन (सी.टी.ए.)

यह भारत में प्रवासित तिब्बती समुदाय तथा अन्य देशों में प्रवासित तिब्बती लोगों का राजनीतिक संगठन है। इसकी स्थापना 28 अप्रैल 1959 में हुई। इसका मुख्यालय मैक्लियोडगंज धर्मशाला, हिमांचल प्रदेश में स्थित है। इस संस्था के प्रमुख परमपावन दलाई लामा होते हैं। सेन्ट्रल तिब्बतन एडमिनिस्ट्रेशन प्रवासित तिब्बती समुदाय का न केवल राजनैतिक संगठन है बल्कि एक धार्मिक संगठन भी है। इस संस्था (सी.टी.ए.) के अधीन अनेक संगठन भी हैं जो इस संस्था को सक्रिय रखने तथा तिब्बती समुदाय के लोगों को इससे जुड़ने के लिए प्रेरित करते हैं। इन संगठनों में मुख्यतः तिब्बतन यूथ कांग्रेस, तिब्बतन वूमन एसोसिएशन, नेशनल डेमोक्रेटिक पार्टी ऑफ तिब्बत तथा सेन्ट्रल तिब्बतन एसोसिएशन हैं। इन सभी संगठनों के मुखिया दलाई लामा होते हैं। सेन्ट्रल तिब्बतन एडमिनिस्ट्रेशन भारत में प्रवासित तिब्बती समुदाय के लिए विभिन्न स्तरों जैसे - शिक्षा के लिए विद्यालय, स्वास्थ्य सेवाएं, सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा आर्थिक विकास इत्यादि ऐसे अनेक क्षेत्रों में कार्य करता है। तिब्बती समुदाय के प्रवास के पश्चात् तिब्बती विशिष्ट संस्कृति के संरक्षण में उक्त संस्था (सी.टी.ए.) का महत्वपूर्ण योगदान है। शिक्षा किसी भी समुदाय के लिए विकास की सूचक होती है और शिक्षा के बिना किसी भी समाज की प्रगति नहीं हो सकती है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर दलाई लामा ने सर्वप्रथम तिब्बती समुदाय को शिक्षित करना अपना कर्तव्य समझा। तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू से भारत में प्रवास कर रहे तिब्बती समुदाय के लिए अलग विद्यालयों की व्यवस्था का अनुरोध किया। भारत सरकार द्वारा अपनी उदारता दिखाते हुए दलाई लामा का यह अनुरोध स्वीकार कर लिया गया। इसके परिणामस्वरूप दो लोकप्रिय लोगों (पंडित जवाहर लाल नेहरू व दलाई लामा) ने सेन्ट्रल तिब्बतन स्कूल एडमिनिस्ट्रेशन (सी.टी.एस.ए.) नामक संस्था का निर्माण किया। यह संस्था न केवल प्रवासित तिब्बती समुदाय की शिक्षा के लिए स्थापित हुई थी बल्कि नए परिवेश में विशिष्ट तिब्बती संस्कृति व परम्परा का संरक्षण एवं नई पीढ-ी को हस्तान्तरण करना इसका उद्देश्य था। सेन्ट्रल तिब्बतन स्कूल एसोसिएशन संस्था भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय (वर्तमान में मानव संसाधन विकास मन्त्रालय) के अन्तर्गत सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम 31, 1860 के तहत पंजीकृत है। इस संस्था का पहला विद्यालय 3 मार्च 1960 को मसूरी (देहरादून) में स्थापित किया गया। इसके पश्चात् हिमांचल प्रदेश के शिमला व डलहौली में विद्यालय स्थापित किये गये। कुछ समय बाद भारत के सभी तिब्बती सेटलमेण्ट्स में यह विद्यालय स्थापित हो चुके थे। सन् 1965 तक इन विद्यालयों में विद्यार्थियों की संख्या 5600 (पाँच हजार छः सौ) हो गई थी, जिनमें से 4359 विद्यार्थी बोडर्स व 1241 डे स्कोलर थे। यह विद्यालय भारत में प्रवासित तिब्बती समुदाय की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर स्थापित किये गये थे।

वर्तमान समय में सीनियर सेकेण्ड्री विद्यालयों की संख्या 9 है जिसमें से 6 रेजिडेन्शियल व तीन डे स्कूल हैं। सेकेण्ड्री डे स्कूलों की संख्या पाँच तथा मिडिल स्कूलों की संख्या सात तथा प्री-प्राइमरी स्कूलों की संख्या चौतीस (34) है। ये सभी सेन्ट्रल तिब्बतन स्कूल एसोसिएशन के अन्तर्गत कार्य करते हैं। ये सभी विद्यालय सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ सीनियर एजूकेशन से सम्बद्ध हैं।

तिब्बती बौद्ध धर्म व दलाई लामा (धार्मिक गुरू)

तिब्बती समुदाय के जीवन में धर्म की महत्वपूर्ण भूमिका है। तिब्बती समुदाय के जीवन के विभिन्न परिप्रेक्ष्यों को ज्ञात करने के लिए तिब्बती धर्म के विषय में जानना अत्यन्त आवश्यक है। धर्म एक ऐसी संस्था है जिसका समाज पर नियन्त्रण रहता है साथ ही तिब्बती समुदाय के जीवन की प्रत्येक गतिविधि में धर्म का महत्वपूर्ण स्थान है।

पारम्परिक तिब्बती समुदाय में तिब्बती धर्म एक ऐसी शक्तिशाली संस्था थी, जो तिब्बती बौद्ध भिक्षुओं द्वारा नौकरशाही की व्यवस्था के अनुरूप संचालित होती थी। यह कहना गलत नहीं होगा कि समय के साथ तिब्बती बौद्ध धर्म न केवल नयी संस्कृति के साथ अपनी संस्कृति को आत्मसात कर रहा है बल्कि आधुनिक समाज की विचारधारा को भी अपना रहा है, जिसके कारण तिब्बती समुदाय विकास की ओर बढ़ रहा है। प्रवासित तिब्बती समुदाय के तिब्बत में पाँच प्रमुख सम्प्रदाय थे, जिनका तिब्बती समाज में बहुत अधिक महत्व था। तिब्बती समुदाय का पहला सम्प्रदाय बोन सम्प्रदाय है। इस सम्प्रदाय के अनुयायी को 'बोनपा' कहा जाता है। कुछ तिब्बती लोग इस सम्प्रदाय को आज भी मानते हैं। यह तिब्बती समुदाय का सबसे पुराना सम्प्रदाय माना जाता है।

तिब्बती समुदाय का दूसरा सम्प्रदाय निड़मा ;छलपदहउंद्ध है। यह भी सबसे पुराना सम्प्रदाय माना जाता है। इस सम्प्रदाय को तिब्बत में स्थापित करने का श्रेय भारत के महान गुरू पद्समाम्भव का जाता है जिन्होंने तिब्बत में सबसे पहला मठ आठवीं शताब्दी में स्थापित किया। इस मठ का नाम शाम्ये मठ है। तीसरा सम्प्रदाय कग्पू है। यह सम्प्रदाय अपनी अध्यात्मिक शिक्षा के लिए जाना जाता है। इसके संस्थापक गैमपोपा हैं। तिब्बती समुदाय का चौथा सम्प्रदाय साक्पा है। इस सम्प्रदाय की स्थापना सन् 1073 में कोन्चोक गैल्पो ने की थी। कोन्चोक गैल्पो ने ही साक्या मठ की भी स्थापना की थी। भारत में साक्पा सम्प्रदाय का मुख्यालय राजपुरा उत्तर प्रदेश में है। साक्या सम्प्रदाय के लामा (पंडित) लाल टोपी पहनते हैं।

तिब्बती समुदाय का पांचवां सम्प्रदाय गेलुग है। गेलुग सम्प्रदाय भारत में प्रवासित तिब्बती समुदाय का प्रमुख सम्प्रदाय है। इस सम्प्रदाय के पंडित (लामा) पीली टोपी पहनते हैं। इस सम्प्रदाय के संस्थापक श्री सांग्खापा हैं। इसका पहला मठ गान्देन था, जो सन् 1409 में तिब्बत में बनाया गया था। तिब्बतियों के अध्यात्मिक गुरू दलाई लामा सतरहवीं शताब्दी से गेलुग सम्प्रदाय से सम्बन्धित है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि समय के साथ तिब्बती समुदाय के पाँच प्रमुख सम्प्रदाय बोन, निङ्मा, कग्यू, साक्पा तथा गेलुग हैं। बोन सम्प्रदाय तिब्बत में भारत के आरम्भिक बौद्ध धर्म के सांस्कृतिक विस्तार के विषय में अवगत करता है। सांतवीं शताब्दी में निङ्मा सम्प्रदाय के द्वारा भारत के बौद्ध धर्म को मानने वाले गुरूओं को तिब्बत में पहली बार सांस्कृतिक प्रसार की यात्रा के लिए आमन्त्रित किया गया था। कग्यू तथा साक्पा सम्प्रदाय के दौरान भी भारत के बौद्ध धर्म गुरूओं को आमन्त्रित किया गया था। यह भारत के गुरूओं की दूसरी सांस्कृतिक व अध्यात्मिक प्रसार का प्रमाण प्रस्तुत करता है तथा अन्तिम सम्प्रदाय गेलुग सम्प्रदाय है, जो वर्तमान में भारत में प्रवास करने वाले अधिकांश तिब्बतियों ने अपना लिया है यह सम्प्रदाय चौदहवीं शताब्दी का सम्प्रदाय है।

तिब्बती बौद्ध धर्म, भारत के बौद्ध धर्म की महायान शाखा की एक उपशाखा है, जो तिब्बत, मंगोलिया, भूटान, उत्तर नेपाल, उत्तर भारत के लद्दाख, अरूणाचल प्रदेश आदि क्षेत्रों में प्रचलित है। तिब्बती इस सम्प्रदाय की धार्मिक भाषा है। इसके अधिकतर धर्मग्रन्थ तिब्बती व संस्कृत में ही लिखे हुए हैं। वर्तमान काल में 14वें दलाई लामा इसके सबसे बड़े धार्मिक नेता हैं। चौदहवें दलाई लामा तेनजिन ग्यात्सो (06 जुलाई 1935 से अब तक) हैं। दलाई लामा तिब्बत के राष्ट्राध्यक्ष और अध्यात्मिक गुरू हैं। उनका जन्म 6 जुलाई 1935 को उत्तर पूर्वी तिब्बत के तकस्तर क्षेत्र में रहने वाले येओमना परिवार में हुआ था। चूँकि तिब्बत में पुनर्जन्म में बहुत विश्वास किया जाता है इस आधार पर माना जाता है कि दलाई लामा बार-बार अवतार लेते हैं। इसी विश्वास के चलते दो वर्ष की आयु में बालक ल्हामो धोल्डुप की पहचान तेरहवे दलाई लामा के अवतार के रूप में की गयी। तिब्बती समुदाय के तेरहवें दलाई लामा थुब्टेन ग्यात्सो थे। दलाई लामा एक मंगोलियाई पदवी है जिसका अर्थ होता है करूणा अवलोकेतेश्वर या ज्ञान का सागर अर्थात् महात्मा बुद्ध के गुणों का साक्षात अवतार। इन्हें बोधिसत्व भी कहते हैं। बोधिसत्व ऐसे ज्ञानी लोग होते हैं, जिन्होंने अपने निर्वाण को टाल दिया हो और मानवता की रक्षा के लिए पुनर्जन्म लेते रहने का निर्णय लिया हो। सम्मानपूर्वक उन्हें परमपावन भी कहा जाता है। कहा जाता है कि परमपावन दलाई लामा ने अपनी मठावासीय शिक्षा छह वर्ष की अवस्था में प्रारम्भ की तथा 23 वर्ष की अवस्था में सन् 1959 के वार्षिक मोनलम (प्रार्थनार्थ उत्सव) के दौरान जोखांग मन्दिर, ल्हासा में अपनी फाइनल परीक्षा दी। उन्होंने यह परीक्षा ऑनर्स के साथ पास की। इस आधार पर उन्हें सर्वोच्च उपाधि गेशे डिग्री ल्हारम्पा अर्थात् बौद्ध धर्म में पीएच.-डी. प्रदान की गयी।

सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन में परिवर्तन

प्रवास के उपरान्त तिब्बती समुदाय के सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन में परिवर्तन हुआ है तथा परिवर्तन की यह प्रक्रिया हमेशा चलती भी रहेगी क्योंकि जब एक विशिष्ट सामाजिक व सांस्कृतिक समुदाय दूसरे स्थान पर प्रवास करता है तो स्थानीय संस्कृति के प्रभाव से प्रवासित समूह के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन का पारम्परिक स्वरूप धीरे-धीरे परिवर्तित होने लगता है। प्रवास की पहली पीढ़ी अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक संस्थाओं को संरक्षित करती है जबकि दूसरी तथा तीसरी पीढ़ी स्थानीय संस्कृति से प्रभावित होती है जिसके कारण परिवर्तन होना स्वाभाविक है। तिब्बती समुदाय के शैक्षिक, पारिवारिक, धार्मिक, आर्थिक तथा राजनैतिक संस्थाओं पर प्रवास का प्रभाव पड़ा है। तिब्बत में संयुक्त परिवार का रूप एकल परिवार ने ले लिया है। शिक्षा के लिए मठों में जाते थे परन्तु वर्तमान समय में मठों का स्थान स्थानीय पब्लिक विद्यालयों ने ले लिया है। अधिकांश तिब्बती समुदाय शिक्षा के लिए अपने बच्चों को मठों या तिब्बती संस्था द्वारा संचालित विद्यालयों में भेजने की अपेक्षा स्थानीय विद्यालयों में दाखिल कर रहे हैं। भाषा के आधार पर तिब्बती के बाद हिन्दी दूसरी भाषा है जो तिब्बतियों द्वारा दैनिक बोलचाल में प्रयोग की जा रही है। खान-पान में भी तिब्बती तथा पश्चिमी भोजन की तुलना भारतीय भोजन का प्रयोग किया जाने लगा है। तिब्बती समुदाय को पारम्परिक पेय चांग के स्थान पर अधिकांश तिब्बती मीठी चाय पीने लगे हैं। पुनर्जन्म में विश्वास के सन्दर्भ में कोई विशेष परिवर्तन नहीं देखा गया है। अधिकांश तिब्बती आज भी यह मानते हैं कि दलाई लामा का पुनर्जन्म होता है। पारम्परिक तिब्बती समाज में स्तरीकरण कृषि पर आधारित था जो प्रवास के बाद व्यवसाय पर आधारित हो गया है। तिब्बत में विवाह के तीन रूप प्रचलित थे, जिसमें एक विवाह, बहुपत्नी तथा बहुपति विवाह होते थे। बहुपत्नी व बहुपति विवाह में भी बहुपति विवाह प्रथा अधिक प्रचलित थी जो परिवार की कृषि भूमि को विभाजित होने से संरक्षित करती थी परन्तु वर्तमान समय में सभी तिब्बती व्यवसाय या व्यापार कर रहे हैं, जिसके कारण तिब्बती समुदाय में बहुविवाह के स्थान पर सभी लोग एक विवाह व्यवस्था को अपना चुके हैं। विवाह की आयु में भी परिवर्तन हुआ है। तिब्बत में 15 से 20 वर्ष की आयु में विवाह किया जाता था परन्तु अब विवाह की आयु 25 से 30 वर्ष या 30 से अधिक हो गयी है। अन्य समुदायों में भी तिब्बती युवक- युवतियाँ विवाह कर रहे हैं, जिसमें हिन्दू व ईसाई समुदाय में विवाह अधिक हो रहे हैं। व्यवस्थित विवाह के स्थान पर प्रेम विवाह अधिक हो रहे हैं। विवाह के समय स्त्री को धन या वस्तुएं देने की प्रथा में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। विवाह के पारम्परिक रीति-रिवाज आज भी प्रचलित हैं। तिब्बती समुदाय के स्थानीय लोगों से अच्छे सम्बन्ध हैं। स्थानीय समुदाय के लोगों को अपने धार्मिक तथा पारिवारिक आयोजनों में आमन्त्रित करते हैं तथा स्थानीय लोग भी तिब्बतियों को अपने धार्मिक उत्सवों व कार्यक्रमों में आमन्त्रित करते हैं।

निष्कर्ष

तिब्बती समुदाय के शैक्षिक, पारिवारिक, धार्मिक, आर्थिक तथा राजनैतिक संस्थाओं पर प्रवास का प्रभाव पड़ा है। शिक्षा आधुनिकीकरण, प्रौद्योगिकी, तकनीकी इत्यादि के दबाव में किसी भी प्रवासित समुदाय में परिवर्तन स्वभाविक है। तिब्बती समुदाय परिवर्तन के ऐसे दौर से गुजर रहा है जहाँ एक ओर अपनी विशिष्ट संस्कृति के विलुप्त होने का भय तथा दूसरी ओर आधुनिक युग से पिछड़ने का भय भी लगातार रहता है। युवा पीढ़ी इस परिस्थिति से सामंजस्य स्थापित करने में आधुनिक विचारधार से अधिक प्रेरित लगती है।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

1. *https//Tibet.net/about-cta/Tibet-in-exile*
2. *Tibetan Rehabilitation Policy 2014, retrived on February 2021 from https://sardfund.org/wp-content/uploads/tibetan-rehab-policy-2014.*
3. *https://centreltibetanreliefcommittee.org/settlement/tibetan-settlement-in-India*
4. *More & Frank (1960). The Revolution in tibet,p.136*
5. *Pakshapa,v.(1978). Tibetan in India: A Case Study of Munugad Tibetan, Delhi publication p.113-114.*
6. *The Uprooted Tibetan in India (1984). A Sociological Study of Continuity and Change. P.11-18, 95-105.*
7. *Jaiswal, Rajeev (1997).Tibetan Refugee in India: A Sociological Study of Continuity and Change, retrieved on 23 August 2019.*
8. *Ganguly, Ramanuj (2002). International Refugee Law: A Reader & Refugee Human Rights: Sociological Bulletin: Journal of the India, Sociological Society. Vol. 51, No. 2, p. 280.*